हिन्दी विभाग

दिनांक 22 SEP 1997

## संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. राजेन्द्र पांडुरंग पवार द्वारा लिखित "गिरिराज किशोर का नाट्य-शिल्प " लघु शोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण,
एम्.ए.,बी.एड.,पी--एच.डी.

अधिव्याख्याता (वरिष्ठ श्रेणी),
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

तथा

प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिन्दी परिषद ।

दिनांक - 22 सितम्बर, 1997।

## प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री. राजेन्द्र पांडुरंग पवार ने मेरे निर्देशन में " गिरिराज किशोर का नाट्य-शिल्प ’ लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी ) उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजना नुसार सम्पन्न इस कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को आद्योपान्त पढ़कर और पूरी तरह से संतुष्ट होकर ही मैं इसे परिक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति देता हूँ ।

कोल्हापुर ।
दिनांक -22-9-1997 ।

शोध-निर्देशक

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण )

# प्रख्यापन

"गिरिराज किशोर का नाट्य–शिल्प " लघु शोध–प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । प्रस्तुत रचना इससे पूर्व इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

कोल्हापुर ।
दिनांक : 22 : 9 :1997

शोध–छात्र
(राजेन्द्र पांडुरंग पवार )

# प्राक्कथन

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

# प्राक्कथन

नाटक शुरू से मेरे अध्ययन और रूचि का विषय रहा है । गिरिराज किशोर आठवें तथा नवें दशक के एक सशक्त हिन्दी नाटककार हैं । वस्तुतः हिंदी नाट्य-क्षेत्र में मोहन राकेश ने जो नया आंदोलन शुरू किया औरजो नाट्य-लेखन की उन्नत परम्परा आरम्भ हुई उस आंदोलन और परम्परा को जिन चुनीन्दा नाटककारों ने पुष्पित एवं पल्लवित किया उनमें गिरिराज किशोर का नाम अग्रणी है । किशोर जी ने हिन्दी नाट्य-क्षेत्र में नये आयाम प्रस्तुत किए हैं। उनके समग्र नाटक न केवल कथ्य की दृष्टि से अपितु शिल्प की दृष्टि से भी अत्यन्त सशक्त हैं । रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से हिन्दी नाटक परम्परा में किशोर जी का नाट्य-साहित्य निश्चय ही सफलतम् है । समकालीन समाज, राजनीति एवं प्रशासन उनके नाटकों के मुख्य विषय हैं । जब मैंने किशोर जी के " प्रजा ही रहने दो " और " जुर्म आयद " नाटक पढ़ें तभी मैंने महसूस किया कि हिन्दी नाटक साहित्य में, विशेष कर आठवें तथा नवें दशक के हिन्दी नाट्य-साहित्य में यह नाटक सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ हैं । गिरिराज किशोर का नाटक पढ़ने वाला कोई भी सम्वेदनशील पाठक यह कहने की भूल कभी नहीं करेगा कि हिन्दी नाटक उन्नत नहीं है । लेकिन आश्चर्य की बात ये है कि किशोर जी के नाटकों पर विशेष रूप से शोध कार्य नहीं हुआ । जब मुझे एम्.फिल. के लघु शोध-प्रबन्ध के विषय-चयन का अवसर प्राप्त हुआ तब मैंने तुरन्त इस नाटककार को अपने विशेष अध्ययन का केन्द्र बनाया । इस विषय के सन्दर्भ में मैंने अपने मार्गदर्शक गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से बात की और उन्होंने तुरन्त स्वीकृति दे दी । तब मेरा उत्साह द्विगुणित हुआ और मैंने शोध-कार्य आरम्भ किया । इस विषय के अध्ययन के आरम्भ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न खड़े हुए थे --

(1) गिरिराज किशोर का जीवन किस तरह बीता है ?
(2) किन-किन साहित्य-विधाओं में उन्होंने लेखन किया है ?
(3) गिरिराज किशोर के नाटकों के वस्तु-शिल्प की कौनसी विशेषताएँ है ?
(4) चरित्र-शिल्प एवं संवाद-शिल्प की दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटक कैसे हैं ?
(5) क्या गिरिराज किशोर के नाटक अभिनेय हैं ?
(6) मंचीयता की दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटकों की कौनसी विशेषताएँ हैं ?

(7) गिरिराज किशोर के नाट्य-साहित्य का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

(8) भाषा-शिल्प की दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटक कैसे हैं ?

(9) नाट्य-शिल्प की दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटक कैसे हैं ?

अध्ययन के उपरान्त इन प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है । अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का चयन किया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में गिरिराज किशोर के जीवन-परिचय एवं कृतित्व को संक्षेप में प्रस्तुत किया है । इस अध्याय में उनके जन्म, माता-पिता, बचपन, परिवार, शिक्षा-दीक्षा, नौकरी, विवाह, दाम्पत्य-जीवन और व्यक्तित्व की विशेषताएँ आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत है । उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है । कृतित्व के अन्तर्गत साहित्य पुरस्कार, स्वदेश एवं विदेश में अनूदित रचनाएँ तथा लेखन आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिये हैं ।

द्वितीय अध्याय में गिरिराज किशोर के नाटकों के वस्तु-शिल्प को विशद किया है । इसमें वस्तु-शिल्प का सैद्धांतिक विवेचन किया है । वस्तु-शिल्पके अंतर्गत किशोर जी के नाटकों का विवेचन प्रकाशन क्रम के अनुसार प्रस्तुत है । वस्तु-शिल्प की दृष्टि से विवेच्य नाटकों का आरम्भ , विकास, संघर्ष, अवरोह, अंत तथा दृश्य योजना आदि दृष्टियों से विवेचन किया है । वस्तु-शिल्प की दृष्टि से विवेच्य नाटक किस कोटि में आते हैं आदि बातों को प्रस्तुत किया है और अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिये हैं ।

तृतीय अध्याय में गिरिराज किशोर के नाटकों का चरित्र-शिल्प की दृष्टि से विवेचन किया है ।इसमें "चरित्र" और " शिल्प" शब्द के अर्थ एवं परिभाषाएँ देकर चरित्र-शिल्प की दृष्टि से विवेच्य नाटकों का विवेचन किया है । अध्याय के अंत में चरित्र-शिल्प की दृष्टि से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं ।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत गिरिराज किशोर के नाटकों का संवाद-शिल्प की दृष्टि से विवेचन किया है । इसमें संवादों का नाटक में महत्त्व, उपयुक्त संवादों के गुण प्रस्तुत किए हैं । विवेच्य नाटको में जितने प्रकार के संवाद प्राप्त हैं उनका साधार विवेचन प्रस्तुत है । विवेच्य नाटकों का संवाद-शिल्प की दृष्टि से मूल्यांकन कर अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं ।

पंचम अध्याय में गिरिराज किशोर के नाटकों का अभिनय-शिल्प की दृष्टि से विवेचन किया है। इसमें अभिनय का कोशगत अर्थ, अभिनय की परिभाषा , नाटक में अभिनय का महत्त्व, नाटक और अभिनय का संबंध, अभिनय के प्रकार आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत है । विवेच्य नाटकों में प्राप्त अभिनय-शिल्प के स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत कर अध्ययन के अंत में निष्कर्ष दर्ज किये हैं ।

षष्ठ अध्याय में गिरिराज किशोर के नाटकों का रंगमंच-शिल्प की दृष्टि से विवेचन किया है । इसमें रंगमंच का महत्त्व, नाटक और रंगमंच का संबंध आदि बातों पर प्रकाश डाला है । रंगमंच-शिल्प में विवेच्य नाटकों का मंचीय-व्यवस्था, रंगमंच-निर्देश, दृश्य-योजना , नेपथ्य एवं ध्वनि-योजना आदि दृष्टियों से विवेचन किया है । विवेचन के अंत में प्रत्येक नाटक की दृश्यगत एवं घटनागत विशेषताएँ प्रस्तुत की हैं । तत्पश्चात विवेच्य नाटकों के रंगमंच-शिल्प का मूल्यांकन प्रस्तुत कर अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिये हैं ।

सप्तम अध्याय में गिरिराज किशोर के नाटकों का उद्‌देश्य-शिल्प की दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत है । नाटक में उद्‌देश्य का महत्त्व स्पष्ट करते हुए विवेच्य नाटकों के उद्‌देश्य-शिल्प पर प्रकाश डाला है । उद्‌देश्य-शिल्प की दृष्टि से विवेच्य नाटकों का मूल्यांकन कर अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिये हैं ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के अष्टम अध्याय में गिरिराज किशोर के नाटकों का भाषा-शिल्प की दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत है । इसमें भाषा-शिल्प से तात्पर्य ,नाटक में भाषा-शिल्प का महत्त्व आदि को स्पष्ट कर विवेच्य नाटकों के भाषा-शिल्प के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग; ओजपूर्ण भाषा प्रयोग; सीधी, सरल भाषा; मुहावरेदार, कहावतों से युक्त भाषा; दार्शनिकता से युक्त भाषा; व्यंग्यपूर्ण भाषा-प्रयोग आदि को स्पष्ट किया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिये हैं । अंत में उपसंहार दिया है जो कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का सार रूप है । इसमें पूर्व-विवेचित अध्यायों के वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक पद्‌धति से निकाले गये निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिए हैं । तत्पश्चात परिशिष्ट और सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची संलग्न है ।

## लघु शोध-प्रबन्ध की मौलिकता

1 गिरिराज किशोर आठवें तथा नवें दशक के एक सशक्त हिन्दी नाटककार हैं । लेकिन उचित समीक्षा के अभाव में वे उपेक्षित-से रहे हैं । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में

गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर यथोचित प्रकाश डाल कर इस अभाव की पूर्ति का प्रयास किया है ।

2 गिरिराज किशोर के नाटकों के मुख्य विषय सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ पर आधारित हैं जिसे व्यक्त करने में वे सफल हुए हैं । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला है ।

3 किशोर जी ने नाटक लिखने की विधि के साथ रंगमंच संबंधी विधि की ओर भी अपेक्षित ध्यान रखा है । रंगमंच संबंधी बातों पर प्रस्तुत कार्य में यथोचित् विवेचन किया है ।

4 साहित्यिक उत्कृष्टता के साथ-साथ अभिनेयता इनके नाटकों का महत्त्वपूर्ण गुण है । किशोर जी के नाटक अभिनय की विशेषताओं से पुष्ट हैं और इस दृष्टि से भी इस लघु शोध-प्रबन्ध में विवेचन किया है ।

5 गिरिराज किशोर के नाटकों का नाट्य-शिल्प की दृष्टि से इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रथम बार सूक्ष्मता से विवेचन प्रस्तुत है ।

**ऋण निर्देश--**

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति मे मेरी प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहायता करने वाले तथा समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करने वाले मेरे श्रद्धेय गुरूजन, परिवारजन तथा आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के निर्देशक श्रद्धेय डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, अधिव्याख्याता ( वरिष्ठ श्रेणी ), हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ । श्रद्धेय गुरूवर्य सदा अपने काम में व्यस्त रहने के बावजूद भी स्नेहपूर्ण आशीर्वाद के साथ मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन करते रहें । डॉ. चव्हाण जी ने मुझे बार-बार प्रोत्साहित किया है । आपके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और विद्वत्तापूर्ण व्यासंग ने मेरे मार्ग की बाधाओं को दूर करते हुए मौलिक पथ-प्रदर्शन किया, स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन से मेरा उत्साह बढ़ाया जिसके प्रतिदान में ऋण-निर्देश केवल औपचारिक होगा । डॉ. चव्हाण जी की विद्वत्ता, अपार पाण्डित्य, अथक

परिश्रम करने वाली वृत्ति के प्रति हार्दिक श्रद्धा प्रकट करता हूँ और कामना करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहे ।

इस विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. वसंत मोरे जी का आभार प्रकट किये बिना मैं आगे बढ़ नहीं सकता । आदरणीय गुरूवर्य डॉ. पी.एस्. पाटील जी के मिलनसार स्वभाव के प्रति मैं हमेशा आकर्षित रहा हूँ । उनकी सहायता तथा मार्गदर्शन मुझे समय-समय पर मिलता रहा । इस विभाग के पूर्व मानद अध्यापक गुरूवर्य डॉ. बी.बी. पाटील जी की प्रेरणा भी मुझे बार-बार मिलती रही । गुरूवर्य श्री अरविन्द पोतदार जी ने भी मेरा हौसला बढ़ाया है ।

श्रद्धेय गिरिराज किशोर जी का आभार प्रकट करना मैं अपना फर्ज मानता हूँ । क्योंकि आपने इस कार्य को पूरा करने में मेरी काफी सहायता की । जब मैं साक्षात्कार के सिलसिले में कानपुर गया था तब आपने मुझे तहे दिल से अपने घर-परिवार और साहित्य के बारे में जानकारी दी । साथ ही मेरी शंकाओं को दूर किया है । अतः मैं आपका हृदय से ऋणी हूँ । प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के लिए आवश्यक सन्दर्भ ग्रन्थो की प्राप्ति मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के ग्रथालयों से हुयी । इन विश्वविद्यालयों के ग्रन्थपालों का मैं आभारी हूँ । साथ ही नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के ग्रथपाल का भी मैं आभारी हूँ ।

पूज्य माता-पिता, बहन नन्दा, मेरे मामा तथा मेरे परिवार के सभी लोगों के स्नेह, प्यार तथा आशीर्वाद से ही मैं यह कार्य पूरा कर सका हूँ । मेरे गाँव के मित्रवर संपतराव पाटील, संजय सपकाळ तथा डी.एन्.पाटील आदि ने मुझे इस मौलिक कार्य में डटे रहने के लिए स्नेह एवं सद्भावनापूर्ण सुझाव देकर अपनी सच्ची मित्रता को सिद्ध किया है । मेरे सहपाठी अभिराम शिंदे, जैनुद्दीन शेख, कु. मनीषा सुर्वे तथा जयश्री कुलकर्णी आदि ने भी मुझे शोध-कार्य के लिए प्रोत्साहित किया । इन सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ । साथ ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में जिनसे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में प्रोत्साहित एवं सहयोग प्राप्त हुआ है । उन सभी के प्रति मैं

हृदय से कृतज्ञ हूँ । भविष्य में भी इन सभी लोगों से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध विद्वानों के समक्ष विनम्रता से परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

कोल्हापुर ।
दिनांक : 22 : 9 :1997 ।

शोध-छात्र
(श्री. राजेन्द्र पांडुरंग पवार)

# अनुक्रमणिका

# अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – गिरिराज किशोर : व्यक्तित्व और कृतित्व 1 से 14

1·1· व्यवितत्व–
  1·1·1 जन्म
  1·1·2 माता–पिता
  1·1·3 बचपन
  1·1·4 परिवार
  1·1·5 शिक्षा–दीक्षा
  1·1·6 नौकरी
  1·1·7 विवाह
  1·1·8 दाम्पत्य जीवन

1·2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ –
  1·2·1 बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व
  1·2·2 बुद्धिमान व्यक्तित्व
  1·2·3 विभिन्न रचनाकारों से प्रभावित
  1·2·4 गहन अध्येता
  1·2·5 स्वभाव और रूचि
  1·2·6 व्यक्तित्व–विकास की दिशाएँ
  1·2·7 गांधीवादी और ईश्वरवादी
  1·2·8 मिलनसार

1·3 साहित्यिक कृतित्व –
  1·3·1· साहित्यिक परिचय
    1·3·1·1 नाटक
    1·3·1·2 कहानी–संग्रह
    1·3·1·3 उपन्यास
    1·3·1·4 एकांकी

1·3·1·5 आलोचना

1·3·1·6 बच्चों की पुस्तकें

1·3·2 गिरिराज किशोर जी की स्वदेशी एवं विदेशी भाषाओं में अनूदित रचनाएँ

1·3·3 सम्मान

1·3·4 राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभाग

1·3·5 विदेशी यात्राएँ

निष्कर्ष ।

द्वितिय अध्याय — **गिरिराज किशोर के नाटकों का वस्तु-शिल्प** 19 से 46

प्रास्ताविक

2·1· गिरिराज किशोर का नाट्य-शिल्प

2·2· वस्तु-शिल्प का सैद्धांतिक विवेचन:-

2·2·1 वस्तु : अर्थ एवं परिभाषा

2·2·2 शिल्प : अर्थ एवं परिभाषा

2·2·3 वस्तु-शिल्प से तात्पर्य

2·3 गिरिराज किशोर के नाटकों का वस्तु-शिल्प:-

2·3·1 "नरमेध" नाटक का वस्तु-शिल्प

2·3·2 " प्रजा ही रहने दो " नाटक का वस्तु-शिल्प

2·3·3 "घास और घोड़ा " नाटक का वस्तु-शिल्प

2·3·4 "चेहरे-चेहरे किसके चेहरे " नाटक का वस्तु-शिल्प

2·3·5 "केवल मेरा नाम लो " नाटक का वस्तु-शिल्प

2·3·6 "जुर्म आयद " नाटक का वस्तु-शिल्प

निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय — **गिरिराज किशोर के नाटकों का चरित्र-शिल्प** 47 से 80

3·1 चरित्र : अर्थ एवं परिभाषा

3·2 शिल्प : अर्थ एवं परिभाषा

3·3 चरित्र-शिल्प से तात्पर्य

3·4 गिरिराज किशोर के नाटकों का चरित्र-शिल्प:-

3·4·1 "नरमेध" नाटक में चरित्र-शिल्प

3·4·2 " प्रजा ही रहने दो " नाटक में चरित्र-चित्रण

3·4·3 "घास और घोड़ा " नाटक में चरित्र-शिल्प

3·4·4 "चेहरे-चेहरे किसके चेहरे " नाटक में चरित्र-शिल्प

3·4·5 "केवल मेरा नाम लो " नाटक में चरित्र-शिल्प

3·4·6 "जुर्म आयद " नाटक में चरित्र-शिल्प

विवेच्य नाटकों के चरित्र-शिल्प के निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय — **गिरिराज किशोर के नाटकों का संवाद-शिल्प** 81 से 110

1 संवादों का नाटक में महत्त्व

2 उपयुक्त संवादों के गुण

3 विवेच्य नाटकों के संवाद -

1 संक्षिप्त संवाद

2 प्रवाहमयी संवाद

3 मार्मिक संवाद

4 नाटकीय संवाद

5 पात्रानुकूल संवाद

6 मनोवैज्ञानिक संवाद

7 पात्र की चरित्रगत विशेषताएँ बताने वाले संवाद

8 गतिशील संवाद

9 यथार्थ संवाद

10 भावात्मक संवाद

11 व्यंग्यात्मक संवाद

12 आवेशात्मक संवाद
13 दीर्घ संवाद
14 गंभीर संवाद
15 उपदेशात्मक संवाद
16 अलंकारिक संवाद
17 स्वगत-कथन
4 विवेच्य नाटकों के संवाद-शिल्प का मूल्यांकन
निष्कर्ष ।

**पंचम अध्याय – गिरिराज किशोर के नाटकों का अभिनय-शिल्प** 111 से 126
1 "अभिनय " शब्द का कोशगत अर्थ
2 "अभिनय " की परिभाषा
3 नाटक में अभिनय का महत्त्व
4 नाटक और अभिनय का संबंध
5 अभिनय के प्रकार
6 विवेच्य नाटकों का अभिनय-शिल्प –
  1 आंगिक अभिनय
  2 वाचिक अभिनय
  3 आहार्य अभिनय
  4 सात्त्विक अभिनय
7 विवेच्य नाटकों में प्राप्त अभिनय-शिल्प का स्वरूप

निष्कर्ष ।

**षष्ठ अध्याय** **- गिरिराज किशोर के नाटकों का रंगमंच-शिल्प** 127 से 144

1 रंगमंच का महत्त्व

2 नाटक और रंगमंच का संबंध

3 विवेच्य नाटकों में रंगमंच-शिल्प --

    1 "नरमेध" नाटक का रंगमंच-शिल्प
    2 "प्रजा ही रहने दो " नाटक का रंगमंच-शिल्प
    3 "चेहरे-चेहरे किसके चेहरे " नाटक का रंगमंच-शिल्प
    4 "घास और घोड़ा" नाटक का रंगमंच शिल्प
    5 "जुर्म आयद" नाटक का रंगमंच-शिल्प
    6 "केवल मेरा नाम लो " नाटक का रंगमंच-शिल्प

4 विवेच्य नाटकों के रंगमंच-शिल्प का मूल्यांकन

    निष्कर्ष ।

**सप्तम अध्याय** **- गिरिराज किशोर के नाटकों में उद्देश्य-शिल्प** 145 से 153

1 नाटक में उद्देश्य का महत्त्व

2 किशोर जी के नाटकों का उद्देश्य-शिल्प

    1 "नरमेध" नाटक का उद्देश्य-शिल्प
    2 "प्रजा ही रहने दो " नाटक का उद्देश्य-शिल्प
    3 "घास और घोड़ा" नाटक का उद्देश्य-शिल्प
    4 "चेहरे-चेहरे किसके चेहरे " नाटक का उद्देश्य-शिल्प
    5 "केवल मेरा नाम लो " नाटक का उद्देश्य-शिल्प
    6 "जुर्म आयद" नाटक का उद्देश्य -शिल्प

3 उद्देश्य-शिल्प का मूल्यांकन

    निष्कर्ष ।

**अष्टम अध्याय** **– गिरिराज किशोर के नाटकों का भाषा–शिल्प** 154 से 166

8.1 भाषा–शिल्प से तात्पर्य

8.2 नाटक में भाषा–शिल्प का महत्त्व

8.3 विवेच्य नाटकों में भाषा–शिल्प

8.3.1 विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग

8.3.1.1 अरबी–फारसी के शब्द

8.3.1.2 अँग्रेजी शब्द

8.3.2 ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग

8.3.3 सीधी, सरल भाषा

8.3.4 मुहावरेदार, कहावतों से युक्त भाषा

8.3.5 दार्शनिकता से युक्त भाषा

8.3.6 व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग

8.3.7 प्रभावशाली भाषा का प्रयोग

निष्कर्ष ।

* उपसंहार 167 से 174
* परिशिष्ट क्रमांक–1 175 से 181
* परिशिष्ट क्रमांक – 2
* परिशिष्ट क्रमांक–3
* परिशिष्ट क्रमांक–4
* परिशिष्ट क्रमांक–5

*सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची । 182 से 185